Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

पाणिनि की संस्कृत व्याकरण के विकास में भूमिका

Dr. Badlu Ram Shastri*

Lecturer in Sanskrit, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan

संक्षेपण:- ***पाणिनी (700 ईसा पूर्व) संस्कृत भाषा का सबसे बड़ा व्याकरण आचार्य है। उनका जन्म उत्तर-पश्चिम भारत के गांधार में हुआ था। उनके व्याकरण का नाम अष्टाध्यायी है जिसमें आठ अध्याय और लगभग चार सहस्र सूत्र हैं। संस्कृत भाषा को व्याकरणिक रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है। अष्टाध्यायी केवल व्याकरण का पाठ नहीं है। इस तरह से तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्रण मिलता है। उस समय के भूगोल, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा और राजनीतिक जीवन, दार्शनिक सोच, भोजन, भोजन, रहने आदि के विषयों का उल्लेख है। इस लेख में पाणिनी की संस्कृत व्याकरण के विकास में भूमिका का अध्ययन किया गया है।***

मुख्य शब्दः - पाणिनि के कार्य, पाणिनि का महत्व, पाणिनि की सूत्रबद्ध शैली, पाणिनि और आधुनिक दार्शनिकता, औपचारिक प्रणाली की तुलना।

----------X----------

जीवनीः

पाणिनि का जन्म 700 ईसा पूर्व में शालतुर नामक गाँव में हुआ था। यह गाँव संगम से कुछ मील की दूरी पर था जहाँ काबुल नदी सिंधु में मिलती है। उसे अब लाहौर कहा जाता है। उनके जन्मस्थान के अनुसार पाणिनि को शालुतुर्य भी कहा जाता है। और वह स्वयं अष्टाध्यायी में इस नाम का उल्लेख करते हैं। चीनी यात्री युवानच्वान (7 वीं शताब्दी) ने उत्तर पश्चिम से आने के दौरान शालतुर गाँव का दौरा किया था। पाणिनि के गुरु का नाम पिता का नाम पणिन और माता का नाम दाक्षी था।

उद्देश्य:

1. पाणिनि का संस्कृत व्याकरण के विकास में भूमिका का अध्ययन किया गया है।
2. पाणिनि की सूत्र शैली, आधुनिक भाषा शास्त्र एवं औपचारिक तंत्रों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

परिकल्पना:

1. पाणिनि संस्कृत के महान व्याकरणाचार्य हुए हैं।
2. पाणिनि के वार्तिक व्याकरण में महत्वपूर्ण हैं।

सूचना संग्रह:

प्रस्तुत अध्ययन में सूचनाओं का संकलन कालिदास की विभिन्न रचनाओं, साहित्कारों, साहित्य संगोष्टी एवं पुस्तकालयों का अध्ययन करके किया गया है।

समयकाल:

उनका समय अनिश्चित और विवादित है। यह निश्चित है कि वे ईसा पूर्व छठी शताब्दी के बाद और चैथी शताब्दी ईसा पूर्व से पहले अस्तित्व में थे। ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म पंजाब (पाकिस्तान) के शालतुला में हुआ था, जो आधुनिक समय के पेशावर (पाकिस्तान) के करीब है। उनका जीवनकाल 520 - 60 ईसा पूर्व माना जाता है।

यावानी शब्द का उद्धरण पाणिनी के जीवनकाल को मापने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसकी व्याख्या ग्रीक महिला या ग्रीक लिपि से की गई है। गांधार में यूनानियों के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी सिकंदर के आक्रमण से पहले नहीं थी। सिकंदर लगभग 330 ईसा पूर्व भारत आया था। लेकिन ऐसा हो सकता है कि पाणिनि को फारसी सेक्स के माध्यम से यवनों का ज्ञान होगा और पाणिनी भी दारा I[st] (शासनकाल - 521 - 45 ईसा पूर्व) की अवधि में हो सकते हैं। प्लूटार्क के अनुसार, जब सिकंदर भारत आया था, तो यहाँ पहले से ही कुछ यूनानी बस्तियाँ थीं।

www.ignited.in

लेखन शैली:

ऐसा माना जाता है कि पाणिनि ने लिखने के लिए कुछ माध्यम का उपयोग किया होगा क्योंकि उनके द्वारा उपयोग किए गए शब्द बेहद साफ थे और लेखन के बिना उनके विश्लेषण की संभावना कम लगती है। कई लोग कहते हैं कि उन्होंने अपने लेखन की पुस्तक के रूप में अपने शिष्यों की स्मृति का उपयोग किया। भारत में लिपि का पुनः उपयोग (सिंधु घाटी सभ्यता के बाद) 6 ठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ और ब्राह्मी लिपि का पहला उपयोग उत्तर भारत के गांधार से दूर दक्षिण भारत के तमिलनाडु में हुआ। 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में गांधार के पास फारसी शासन था और यह संभव है कि उन्होंने अरामी पात्रों का उपयोग किया हो।

पाणिनि के कार्य:

जब पाणिनी बड़े हुए, तो उन्होंने व्याकरण का गहन अध्ययन किया। पाणिनि से पहले, शब्दावली के कई स्वामी थे। अपने ग्रंथों को पढ़कर और उनके आपसी मतभेदों को देखते हुए, पाणिनी को यह विचार आया कि उन्हें व्याकरण विज्ञान को व्यवस्थित करना चाहिए। इससे पहले, पाणिनि से पहले, वैदिक संहिताओं, शाखाओं, ब्राह्मणों, अरण्यकों, उपनिषदों, आदि, जिनका विस्तार किया गया था, उन्होंने अपने लिए शब्द ले लिए, जिनका उन्होंने अष्टाध्यायी में उपयोग किया है। उन्होंने दूसरे निरुक्त और व्याकरण की सामग्री को एकत्र किया और अध्ययन किया जो पहले से ही वहां था। इसका प्रमाण अष्टाध्यायी में भी है, जैसा कि आचार्यों के मत से जाना जाता है जैसे कि शाकटायन, शाकाल्य, भारद्वाज, गार्ग्य, सेनक, अपिशली, गलाब और स्फोटायन। पाणिनी से पहले शक्त्यायन निश्चय ही व्याकरणविद थे, जैसा कि निरुक्तकार यास्क ने लिखा है। शक्तयन का मानना था कि सभी संज्ञा शब्द धातुओं से बने हैं। पाणिनि ने इस दृष्टिकोण को स्वीकार किया लेकिन इस मामले में कोई अनुरोध नहीं किया और यह भी कहा कि कई शब्द ऐसे हैं जो लोगों के गले में आ गए हैं और उन्हें धातु प्रत्यय द्वारा नहीं पकड़ा जा सकता है। तीसरी सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि पाणिनी ने लोक को अपनी आंखों से देखा और भटक गए और लोगों के बहुमुखी जीवन का परिचय प्राप्त किया और शब्दों में हेरफेर किया। इस तरह, उन्होंने कई हजारों शब्द एकत्र किए। शब्दों को संकलित करके, उन्होंने उन्हें वर्गीकृत किया और उनकी कई सूचियाँ बनाईं। "धातु पाठ" की एक सूची थी जिसे पाणिनी ने अष्टाध्यायी से अलग रखा है। इसमें 1943 धातुएं होती हैं। धातुकारक में दो प्रकार की धातुएँ होती हैं- 1. जिनका उपयोग साहित्य में पाणिनि से पहले किया गया था और दूसरे जो लोगों की विद्या में पाए गए थे। उनकी दूसरी सूची में वेदों के कई आचार्य थे। कौन सा चरण किस आचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ, और किस नाम से अध्ययनरत छात्र थे और उन श्लोकों या शाखाओं के नाम क्या थे, पाणिनि ने उन सभी का निष्कर्ष अलग-अलग प्रत्यय लगाकर दिया है; ठीक वैसे ही जैसे एक शिक्षक थे टीटीरी। उनके चरण को तैत्तिरीय कहा जाता था और उस विद्यालय के छात्रों और वहाँ की शाखा या संहिता को भी तैत्तिरीय कहा जाता था। पाणिनि की तीसरी सूची "गोत्र" के बारे में थी। मूल सात गोत्र वैदिक युग से ही चलते थे। पाणिनि के समय तक उन्होंने बहुत विस्तार कर लिया था। गोत्रों की कई सूचियाँ श्रौत सूत्र में हैं। जैसे बोधायन श्रौत सूत्र जिसे महापर्व कांड कहा जाता है। लेकिन पाणिनि ने वैदिक और लौकिक दोनों भाषाओं के परिवार या परिवार के नामों की एक बहुत बड़ी सूची बनाई, जिसमें अराशा गोत्र और लौकिक गोत्र दोनों शामिल थे। वे परिवार के छोटे नाम या गलीज़ हैं जिन्हें गोत्रवैव कहा जाता है। पाणिनि ने इस बात का विस्तृत वर्णन किया है कि किस तरह से एक जनजाति या परिवार में दादा, बूढ़े और चाचा (सपिन्द चरण पिता, पुत्र, पौत्र) आदि लोगों के नाम रखे गए।गणों में कई नाम, बाईस सूत्र के साथ, परिशिष्ट ग्रंथ में पाणिनि के "गणपत" नामक हैं। पाणिनि की चैथी सूची भौगोलिक थी। पाणिनी का जन्मस्थान उत्तर पश्चिम में था, जिस क्षेत्र को हम गांधार कहते हैं। ग्रीक भूगोल लेखकों ने लिखा है कि उत्तर-पश्चिम यानी गांधार और पंजाब में लगभग 500 ऐसे गाँव थे, जिनमें से प्रत्येक की आबादी लगभग दस सहस्राब्दी थी। पाणिनि ने उन 500 गाँवों के वास्तविक नाम भी दिए हैं जहाँ से भौगोलिक खातों की सूची बनाई गई है। गाँवों और कस्बों के उन नामों की पहचान एक ईमानदारी का सवाल है, लेकिन अगर बहुत मेहनत की जाए, तो संभव है कि पंजाब में सुनीत और सिरसा दो छोटे गाँव हों, जिन्हें पाणिनि को सुनेत्रा और शारिकश कहा जाता है। पंजाब की कई जातियों के नाम उन गाँवों के अनुसार थे जहाँ जाति निवास करती थी या जहाँ उनके पूर्वज रहते थे। इस तरह, उपनाम जो अभिजात वर्ग और अभिजात वर्ग (पूर्वजों का स्थान) दोनों से बनाया गया था, को पुरुष नाम में जोड़ा गया क्योंकि इस तरह के नाम भी भाषा का हिस्सा थे।

कृतियां:

आचार्य पाणिनि ने संस्कृत के रक्षण के लिए व्याकरण पाँच ग्रंथो की रचना की- एवं एक काव्य लिखा

1. सूत्रपाठ
2. धातुपाठ
3. गणपाठ

www.ignited.in

4. उणादिपाठ

5. लिंगनुशासन

काव्य- जाम्बवतीय काव्यं:

1. अष्टाध्यायी - इसमे सूत्र हैं जो 8 अध्याय एवं प्रत्येक अध्याय 8 8 पाद यानि कुल 32 पाद में विभक्त हैं और कुल लगभग 4000 सूत्र हैं

2. धातुपाठ - यह 10 गणों में विभक्त एवं लगभग 2000 धातुवें हैं

3. गणपाठ- सूत्रपठित गणों का पाठ

4. उणादिपाठ- यह भी सूत्र हि हैं

5. लिंगनुशासन- लिंग निर्धारण विषय

इस प्रकार पाणिनि ने 5 ग्रंथ बनाये जिनमे सबसे प्रमुख और पाणिनि के बुद्धि वैशिष्ट्य को दर्शाने वाला ग्रंथ है अष्टाध्यायी।

कात्यायन ने पाणिनि के सूत्रों पर वार्तिक लिखे।

पतंजलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी पर अपनी टिप्पणी लिखी जिसे महाभाष्य का नाम दिया (महा$भाष्य (समीक्षा, टिप्पणी, विवेचना, आलोचना))।

पाणिनि का महत्त्व:-

एक सदी से भी पहले, प्रसिद्ध जर्मन इंडोलॉजिस्ट मैक्स मूलर (1823-1400) ने अपने विज्ञान में कहा था -

“मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूं कि अंग्रेजी या लैटिन या ग्रीक में, ऐसी अवधारणाएं नगण्य हैं जो संस्कृत धातुओं से प्राप्त शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती हैं। इसके विपरीत, मेरा मानना है कि 2,50,000 शब्दों में अंग्रेजी शब्दकोश की पूरी संपत्ति शामिल है। स्पष्टीकरण के लिए वांछित धातुओं को उचित सीमा के भीतर पाणिनि धातुओं की तुलना में कम है। अंग्रेजी में कोई वाक्य नहीं है जिसमें 800 धातुओं के साथ प्रत्येक शब्द की सामग्री का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया गया है और पाणिनि द्वारा प्रत्येक विचार 121 मौलिक अवधारणाओं से संबंधित नहीं हो सकता है।”

पाणिनि की सूत्र शैली:

पाणिनि के सूत्र की शैली बहुत संक्षिप्त है। उनका जन्म सूत्रा युग में हुआ था। श्रौत सूत्र, धर्म सूत्र, गृहस्थसूत्र, प्रतिसुखसूत्र भी इसी शैली में हैं, लेकिन पाणिनि सूत्र में कहीं और फलना नहीं है। इसीलिए पाणिनि के सूत्र को प्रतिष्ठा सूत्र कहा गया है। पाणिनि ने वर्ण या वर्णमाला को 14 प्रातः सूत्र में विभाजित किया और विशेष क्रम में क्रमबद्ध करके 42 प्रतिहार सूत्र बनाए। पाणिनि की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि वे कम जगह में अधिक सामग्री भर सकते हैं। यदि अष्टाध्यायी के अक्षरों को गिना जाए, तो इसके 3995 सूत्र एक हजार श्लोकों के बराबर हैं। पाणिनि ने अधिक संक्षिप्त ग्रंथों जैसे सूत्र और प्राति के एक या कई शब्दों पर कब्जा कर लिया, अर्थात सूत्र और प्रतिक्रमण, आगे के सूत्रों में ताकि उन्हें दोहराना नहीं। उन्होंने अर्थ की कुछ परिभाषाएँ भी बनाईं। एक अजीब विचित्रता वह अपूर्ण सूत्रों से बाहर निकल गया। यानी, बाद वाला फॉर्मूला आपके सामने फॉर्मूले के काम को गायब कर देता है। पाणिनि का यह अपूर्ण नियम उनकी तंत्र प्रणाली थी जो दुनिया की किसी अन्य पुस्तक में नहीं पाई जाती है।

पाणिनि और आधुनिक दार्शनिक:

19 वीं शताब्दी में यूरोप में पाणिनि का काम ज्ञात हुआ, जिसका आधुनिक मनोविज्ञान पर काफी प्रभाव पड़ा। प्रारंभ में, फ्रेनज़ बोप ने पाणिनि का अध्ययन किया। बाद में, यूरोपीय संस्कृत विद्वानों की कई रचनाएं जैसे कि फर्नांडीस डी सॉसर, लियोनार्ड ब्लूमफील्ड और रोमन जैकबसेन प्रभावित थे। फ्रिट्सचेल ने यूरोप में भाषा पर भारतीय विचार के प्रभाव पर चर्चा की।

फर्डिनेंड डी सॉसर:

पाणिनि और बाद के भारतीय दार्शनिक भर्तृहरि का फर्डिनेंड डी स्यूकर के मूल विचारों पर बहुत प्रभाव था। फर्डिनेंड डी सॉसर एक संस्कृत प्रोफेसर थे, जिन्हें आधुनिक संरचनात्मक विज्ञान का जनक कहा जाता है। तश्तरी ने अपने कुछ विचारों पर भारतीय व्याकरण के प्रभाव का उल्लेख किया। अपने 1881 में “डी लेम्पलोई डु जेनीटिफ एब्सोलु एन संस्क्रिट” (संस्कृत में मूल निरपेक्ष का उपयोग), उन्होंने विशेष रूप से पाणिनी को अपने काम को प्रभावित करने के रूप में वर्णित किया।

www.ignited.in

लियोनार्ड ब्लमफ़ील्ड:

अमेरिकी संरचनावाद के संस्थापक लियोनार्ड ब्लमफ़ील्ड ने 1927 में "ऑन पैनी के कुछ नियम" (यानी पाणिनि के कुछ नियमों पर) शीर्षक से एक पत्र लिखा।

वर्तमान औपचारिक प्रणाली के साथ तुलना:

पाणिनि का व्याकरण दुनिया में पहली औपचारिक प्रणाली है। यह 19 वीं शताब्दी के गोटलॉब फ्रीज और बाद के गणितीय विकास के अन्वेषणों से बहुत पहले विकसित किया गया था। अपने व्याकरण को बनाने के लिए, पाणिनि ने "सहायक प्रतीकों" का उपयोग किया, जिसमें व्याकरणिक व्युत्पन्न को पर्याप्त रूप से नियंत्रित करने के लिए, वाक्यविन्यास श्रेणियों को विभाजित करने के लिए नए सिलेबल्स का उपयोग किया गया था। यही तकनीक, जब एमिल पोस्ट ने "इसे फिर से खोजा", कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषाओं को डिजाइन करने की कसौटी बन गई। आज संस्कृतिकर्मी स्वीकार करते हैं कि पाणिनि का भाषाई उपकरण अच्छी तरह से एक लागू पोस्ट-सिस्टम के रूप में वर्णित है। पर्याप्त मात्रा में इस बात के प्रमाण हैं कि इन प्राचीन लोगों में वर्ग-संवेदनशील व्याकरण में विशेषज्ञता थी और कई जटिल समस्याओं को हल करने की व्यापक क्षमता थी।

निष्कर्ष:

महर्षि पाणिनि संस्कृत भाषा के सबसे बड़े व्याकरणशास्त्री थे। संस्कृत भाषा को व्याकरणिक रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है। अष्टाध्यायी केवल व्याकरण का पाठ नहीं है। इस तरह से तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्रण मिलता है। इनके द्वारा भाषा के सन्दर्भ में किये गये महत्त्व पूर्ण कार्य 19वी सदी में प्रकाश में आने लगे। उस समय के भूगोल, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा और राजनीतिक जीवन, दार्शनिक चिंतन, ख़ान-पान, रहन-सहन आदि के प्रसंग स्थान-स्थान पर अंकित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. अष्टाध्यायी सूत्रपथ, पाणिनि, संपादक-ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ सोनीपत वी.एस. 2050

2. काशीकावृत्तिः, न्यासपद्मजृयता वामनजयदित्य, संपादक - द्वारकादासत्री, कालिकाप्रसाद शुक्लः सुधी प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय श्रेणी 1983

3. काशीकावृतीः, जयदित्य वामन अनंतसस्त्र एडिफा, चैखम्बा प्रकाशन वाराणसी, 1937

4. पद्मजारी; हरदत्त मिश्र दामोदर शास्त्री, तारा प्रकाशन, वाराणसी, 1965

5. जोशी, एस.डी. और जे.ए.एफ. रूडबर्नः अनुवाद और प्रवासी साथियों के साथ पाणिनी की अष्टाध्यायी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली - 1991-2007

6. जोशी, एसडी और जेएएफ। रुडबर्गेनः व्याकरण-भाषा, समर्थार्थिक, अंग्रेजी अनुवाद व्याख्या और टिप्पणी, पूना विश्वविद्यालय, पूना - 1968

7. जिज्ञासु, ब्रह्मदत्त और प्रज्ञादेवी, प्रथम-क्रमः रामलाल

Corresponding Author

Dr. Badlu Ram Shastri*

Lecturer in Sanskrit, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in